खज़ाना

उरी, हिंदी : विदूषक

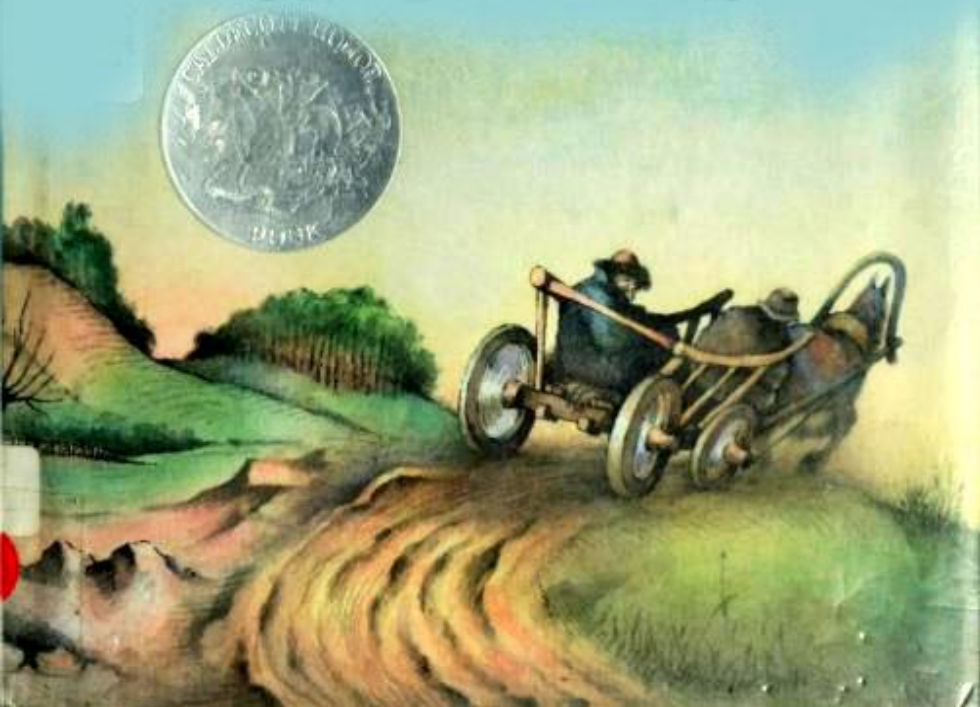

सपने में एक आवाज़ ने इसाक से तीन बार कहा - “राजधानी जाओ, और शाही महल के पास पुल के नीचे खज़ाना ढूँढो.” पहले तो इसाक को यह महज़ बेवकूफी लगी. फिर अपने सपने की सच्चाई को परखने के लिए वो राजधानी के लिए निकला. उसके लिए इसाक को एक लम्बी यात्रा तय करनी पड़ी. इसाक की यात्रा उसे कहाँ ले गई? उसे वहां क्या मिला? यह पुरानी पर रोमांचक कथा आपको ज़रूर पसंद आएगी.

खज़ाना

उरी, हिंदी : विदूषक

किसी ज़माने में एक आदमी रहता था.
उसका नाम इसाक था.

वो बेहद गरीबी में अपनी ज़िन्दगी बसर कर रहा था.
उसे अक्सर भूखे पेट ही सोना पड़ता था.

एक रात उसे एक सपना आया.

सपने में उससे एक आवाज़ ने कहा – राजधानी जाओ. वहां शाही-महल के पास के पुल के नीचे खज़ाना खोजो. “वो तो महज एक सपना था,” आँखें खुलने के बाद उसने सोचा. फिर उसने उस पर कोई खास ध्यान नहीं दिया.

पर वही सपना उसे दुबारा फिर से आया.
पर इसाक ने उसे फिर से नज़रंदाज़ किया.

जब वही सपना तीसरी बार आया तब इसाक को लगा “शायद उसमें कुछ सच्चाई हो,” और उसके बाद वो अपनी यात्रा पर निकला.

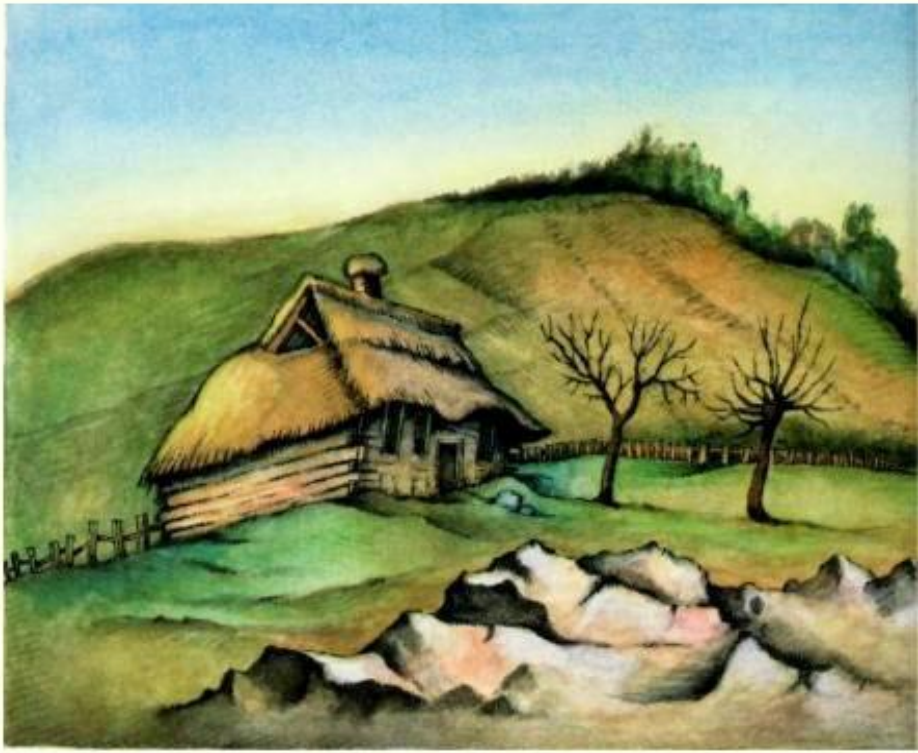

बीच-बीच में उसे कोई मुफ़्ती की सवारी दे देता.
पर इसाक ने ज़्यादातर सफ़र पैदल ही तय किया.

वो जंगलों से होकर गुज़रा.

उसने पहाड़ पार किए.

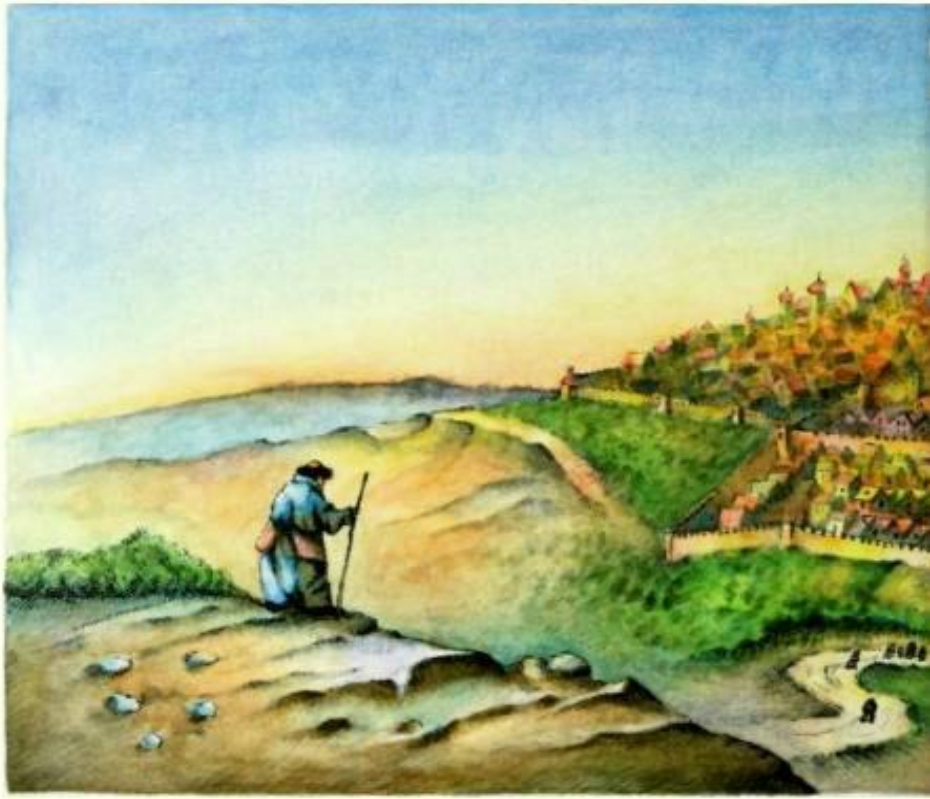

अंत में वो राजधानी पहुंचा.

पर जब वो शाही-महल के नज़दीक वाले पुल पर पहुंचा तो पुल पर चौबीसों घंटों का पहरा लगा था.

फिर खज़ाना खोजने की उसकी हिम्मत ही नहीं हुई.
फिर भी वो रोज़ सुबह पुल पर जाता
और शाम तक उसके आसपास ही घूमता रहता था.

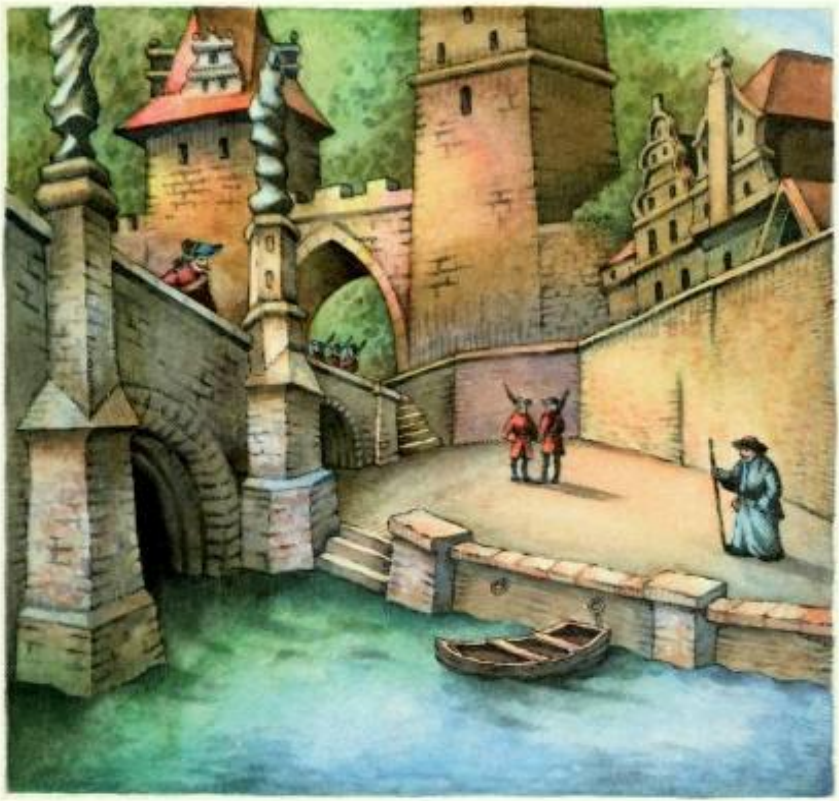

एक दिन पहरेदारों के कप्तान ने इसाक से पूछा,
“तुम यहाँ पर रोज़ाना क्यों आते हो?”

इसाक ने कप्तान को अपने सपने के बारे में बताया.
उसकी बात सुनकर कप्तान हंसा.

“कितनी अजीब बात है,” कप्तान ने कहा, “कि तुम जैसे गरीब आदमी ने अपने सपने के पीछे अपने जूते घिस डाले! सुनो, मुझे भी कभी एक सपना आया था. उसमें मुझे तुम्हारे शहर में जाकर इसाक नाम के आदमी के चूल्हे के नीचे खज़ाना छिपा दिखा था.” उसके बाद कप्तान जोर से हंसा.

इसाक ने झुककर कप्तान को सलाम किया.
उसके बाद वो अपने घर वापिस चला.

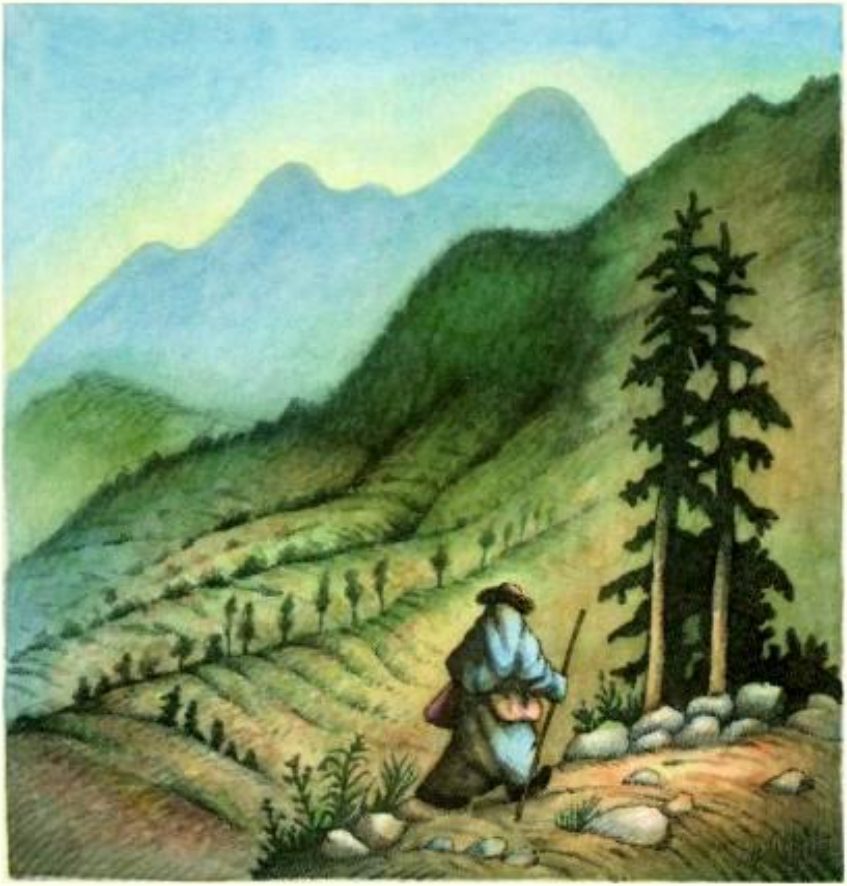

उसने पहाड़ पार किए.

वो जंगलों से होकर गुज़रा.

कभी-कभार उसे कोई मुफ़्ती की सवारी मिल जाती.
पर ज़्यादातर दूरी उसने पैदल ही पूरी की.

अंत में वो अपने शहर में वापिस पहुंचा.

अपने घर पहुँच कर जब उसने चूल्हे के नीचे खोदा
तो उसे एक बहुमूल्य खज़ाना मिला.

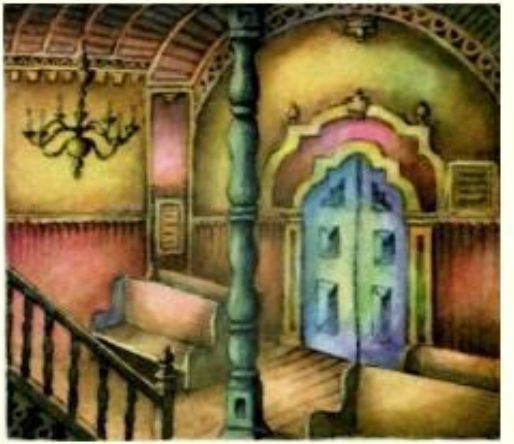

शुक्रिया अदा करने के लिए उसने एक प्रार्थना-मंदिर बनवाया.
मंदिर के कोने में उसने एक तख्ती लगवाई.
तख्ती पर लिखा था :

बिल्कुल पास की चीज़ जानने के लिए
कभी-कभी हमें बहुत दूर जाना पड़ता है.

इसाक ने कप्तान के लिए
एक बहुत महंगा लाल माणिक भेजा.
उसने अपनी बाकी ज़िन्दगी बहुत शांति से बिताई.
वो दुबारा कभी भी भूखे पेट नहीं सोया.